भारत सरकार
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1124

दिनांक 24 जुलाई, 2026 को उत्तर के लिए

पोषण का कार्यान्वयन

1124. श्री सचिदानन्दम आर.:

क्या **महिला और बाल विकास मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या पोषण अभियान और अन्य पोषण संबंधी हस्तक्षेप लागू किए जाने के बावजूद भी, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5) और इसके बाद के सरकारी आंकड़ों से लगातार यह पता चलता है कि पांच वर्ष से कम उम्र के एक तिहाई से अधिक बच्चे नाटेपन के शिकार हैं तथा महिलाओं और बच्चों में एनीमिया का स्तर अभी भी बहुत अधिक है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार ने इन निरंतर बने रहने वाले परिणामों के कारणों का आकलन किया है और इसके साथ ही पोषण लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए क्या सुधारात्मक उपाय प्रस्तावित किए हैं; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री
(श्रीमती सावित्री ठाकुर)

(क) से (घ) कुपोषण एक जटिल और बहुआयामी समस्या है, जो मुख्य रूप से गरीबी, पहुंच और उपलब्धता की समस्याओं के कारण अपर्याप्त भोजन का सेवन, माताओं, शिशुओं व बच्चों के पोषण एवं देखभाल की खराब पद्धतियों, खराब स्वच्छता एवं पर्यावरणीय स्थितियों जैसे कई सामान्य कारकों से प्रभावित होती है। चूंकि कुपोषण से

निपटने के लिए भोजन, स्वास्थ्य, जल, स्वच्छता और शिक्षा संबंधी पहलुओं को शामिल करते हुए एक बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, इसलिए समन्वित तरीके से कुपोषण की समस्या का प्रभावी समाधान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। मिशन सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 (मिशन पोषण 2.0) के तहत 18 से अधिक मंत्रालयों/विभागों के बीच परस्पर व्यापक तालमेल स्थापित करके इस समस्या का समाधान किया जा रहा है।

इसके अलावा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के विभिन्न चरणों ने देश भर में बच्चों में कुपोषण के सूचकांकों में सुधार दिखाया है। एनएफएचएस-1 से एनएफएचएस -6 तक बच्चों के लिए इन सूचकांकों का ब्योरा नीचे दिया गया है:

एनएफएचएस सर्वेक्षण	**ठिगनापन%**
एनएफएचएस -1 (1992-93) *	52
एनएफएचएस -2 (1998-99) **	45.5
एनएफएचएस -3 (2005-06) ***	48.0
एनएफएचएस -4 (2015-16) ***	38.4
एनएफएचएस -5 (2019-21) ***	35.5
एनएफएचएस -6 (2023-24) ***	29.3
आंगनवाड़ी में मापे गए बच्चों का पोषण ट्रैकर डेटा (जून 2026) ***	29.30

* 4 वर्ष से कम आयु के बच्चे
** 3 वर्ष से कम आयु के बच्चे
*** 5 वर्ष से कम आयु के बच्चे

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एनीमिया से पीड़ित बच्चों और महिलाओं का डेटा रिकॉर्ड भी रखता है। एनएफएचएस -5 (2019-21) के अनुसार, 6-59 महीने की आयु के बच्चों में एनीमिया की व्याप्तता 67.1 प्रतिशत है तथा 15-49 वर्ष की आयु की महिलाओं में एनीमिया की व्याप्तता 57 प्रतिशत है।

संपूर्ण सरकार के दृष्टिकोण के रूप में, देश में कुपोषण की समस्या को उच्च प्राथमिकता दी गई है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग और स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग देश में बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण स्तर में सुधार के लिए लगातार लक्षित पहल कर रहे हैं।

मिशन पोषण 2.0 देश में कुपोषण की चुनौतियों के समाधान के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के तहत एक केंद्र प्रायोजित योजना है। विभिन्न कार्यकलापों के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की है। 'पोषण ट्रैकर' डिजिटल एप्लीकेशन का उपयोग करके मंत्रालय द्वारा नियमित समीक्षा की जाती है। इसने देश में लगभग 14 लाख आंगनवाड़ी केंद्रों में कार्यकलापों की तत्समय निगरानी और ट्रैकिंग को सुगम बनाया है। विवरण पोषण ट्रैकर पब्लिक डैशबोर्ड: https://www.poshantracker.in/statistics के लिंक पर उपलब्ध हैं। साथ ही, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की समीक्षा बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जा रही हैं।

नीति आयोग द्वारा 2020 में और 2025 में भी पोषण अभियान का तृतीय-पक्ष मूल्यांकन और प्रभाव मूल्यांकन किया गया था, जिसमें देश में कुपोषण से निपटने के लिए इसकी प्रासंगिकता को संतोषजनक पाया गया।

मिशन पोषण 2.0 के तहत, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा पोषण संबंधी परिणामों में सुधार के लिए विभिन्न उपाय किए गए हैं:

पूरक पोषण : राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 की अनुसूची-II में निहित पोषण मानदंडों के अनुसार बच्चों (6 महीने से 6 वर्ष), गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं और किशोरियों को पूरक पोषण प्रदान किया जाता है। गंभीर रूप से कुपोषित बच्चों को टेक-होम राशन के रूप में अतिरिक्त पोषण भी प्रदान किया जाता है।

- जन-आंदोलन (पोषण पखवाड़ा और पोषण माह - क्रमशः सितंबर और मार्च-अप्रैल के महीने में वर्ष में एक बार मनाया जाता है) के रूप में शुरू किए गए प्रमुख कार्यकलापों में से एक सामुदायिक जुटाव और जागरूकता प्रचार-प्रसार है, ताकि लोगों को पोषण संबंधी पहलुओं पर शिक्षित किया जा सके, क्योंकि पोषण की अच्छी आदतों को अपनाने के लिए व्यवहार परिवर्तन हेतु निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता होती है।

- **पोषण ट्रैकर:** 'पोषण ट्रैकर' एप्लिकेशन को एक महत्वपूर्ण निगरानी उपकरण के रूप में शुरू किया गया है, जिससे बच्चों में ठिगनापन, दुबलापन और अल्पवजन की व्याप्तता की पहचार पहचान करना सुगम हो गया।

- **पोषण वाटिकाएं:** आहार-विविधता और पौष्टिक स्थानीय उपज के सेवन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आंगनवाड़ी केंद्रों में पोषण वाटिकाएं तैयार की गई हैं।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत जीवन चक्र दृष्टिकोण में प्रजनन, मातृ, नवजात, बाल, किशोर स्वास्थ्य और पोषण कार्यनीति कार्यान्वित करता है। इसमें देश भर में किशोरियों, गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं और 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की पोषण संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए कार्यक्रम शामिल हैं। ब्योरा नीचे दिया गया है:

- **एनीमिया मुक्त भारत :** इसमें सात लाभार्थी आयु समूहों और सात कार्यकलापों को मजबूत संस्थागत तंत्र के माध्यम से कवर करते हुए 7X7X7 कार्यनीति के माध्यम से एनीमिया की उच्च व्याप्तता का समाधान किया जाता है।
- **पोषण पुनर्वास केंद्र :** चिकित्सा जटिलताओं के साथ मध्यम और गंभीर रूप से कुपोषित 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को इन-पेशेंट (अस्पताल में भर्ती करके) चिकित्सा और पोषण संबंधी देखभाल प्रदान करना।
- **मां का परम स्नेह** कार्यक्रम**:** स्तनपान के कवरेज में सुधार के लिए।
- **स्तनपान प्रबंधन केंद्र :** नवजात गहन चिकित्सा इकाइयों और विशेष नवजात देखभाल इकाइयों में भर्ती बीमार, समय से पहले जन्मे और कम वजन वाले शिशुओं को दूध पिलाने के लिए सुरक्षित, दान किए गए पाश्चुरीकृत मानव दुग्ध की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- **राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस :** मृदा संचरित कृमि के संक्रमण को कम करने के लिए एल्बेंडाजोल की गोलियां दी जाती हैं।
- **ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण दिवस :** मातृ एवं बाल स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने और पोषण सहित मातृ एवं शिशु देखभाल पर जागरूकता पैदा करने के लिए आयोजित किए जाते हैं।

*****